RESEARCH PAPER | Social Science | Volume : 5 | Issue : 10 | October 2015 | ISSN - 2249-555X

Jilla Sahkari Kendriya Bank Maryadit Durg ka Karyatmak Adhyayan avam Mulyakan

ftyk lgdkjh dUnh; cSd e;kfnr nqxl dk dk;kRed v/;;u ,oa eY;kdu

KEYWORDS: 1- ftyk lgdkjh dUnh; cSd 2- cSd ds dk;l

Mk- gjftUnj iky flg lyqtk	Hkkuq'oj ilkn	Mk- jfo'k dqekj lkuh
ik/;kid & 'kk- fo- ;k- rk- LukrdkRrj Lo'kklh egk- nqxl ¼N-x-½	'kk/kkFkhl & 'kk- fo- ;k- rk- LukrdkRrj Lo'kklh egkfo|ky; nqxl ¼N-x-½	lgk;d ik/;kid & dY;k.k LukrdkRrj egk- fHkykbl uxj ¼N-x-½

ABSTRACT ^^iR;sd vkfFkd {k= dh fØ;kvks ds lpkyu vkSj foLrkj ds fy, foRr@_.k dh vko';drk gkrh gSA ;g ckr Ñf"k {k= eas Hkh ykxw gkrh gS A Ñf"k {k= ds fy, foRr dh miyC/krk bruh vi;kIr vkSj egxh gS fd Ñf"k vFkO;oLFkk ds lefpr fodkl ds jkLrs es ;g cgqr cMh ck/kk cuh gbl gSA**1 Ñf"k foRr dh bl leL;k ds lek/kku es ftyk lgdkjh dUnh; cSd viuh iz[k Hkfedk vnk dj jgk gSA ftyk lgdkjh dUnh; cSd t:jren Ñ"kdks dks Ñf"k vkSj Ñf"k lgk;d fofo/k dk;ks ds fy, foRr@_.k miyC/k djkrk gS ftlls fd Ñ"kd viuh Ñf"k vkSj Ñf"k lgk;d dk;ks dks ljy ,oa O;ofLFkr :i ls dj ldsA bl 'kks/k gsrq ikFkfed ,oa f}rh;d nkuks gh led ks dk ladyu fd;k x;k gS rFkk 'kks/k {k= ¼vfoHkkftr½ ftyk nqxl fy;k x;k gSA cSd dk _.k olyh vkSlr 90-40 ifr'kr gSA tks cgqr vPNk gS ijUrq cSd dh dkykrhr _.k dh olyh vkSj Ñf"k dk;ks es fodkl ds fy, iHkko'kkyh _.k uhfr ,oa uohu Ñf"k _.k ;kstuk,s cukuk pkfg,A ftlls ftyk lgdkjh dUnh; cSd vkfFkd fodkl es ;kxnku ns ldsA

iLrkouk

''प्रत्येक व्यवसाय की सफलता के लिए धन की आवश्यकता होती है कृषि भी एक व्यवसाय है कृषि व्यवसाय में सफलता अर्थात् अधिकतम उत्पादन प्राप्त करने के लिए पूँजी की आवश्यकता होती है।''[2] जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक मुख्यतः कृषकों को कृषि वित्त/कृषि साख उपलब्ध कराता है। जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक कृषकों को कृषि तथा कृषि सहायक प्रयोजनों के अनुसार अल्पकालीन, मध्यकालीन एवं दीर्घकालीन ऋण प्रदान करता है। इस ऋणों को प्राप्त कर कृषक अपने कृषि और कृषि सहायक कार्य जैसे– पशुपालन, मुर्गीपालन, मछलीपालन, रेशम के कीड़े उत्पादन आदि को सुनियोजित और क्रमबद्ध तरीके कर सके ताकि कृषक साहूकारो और बिचौलियों के द्वारा किये जा रहे शोषण से मुक्त हो। परिणामतः कृषको का आर्थिक रूप से विकास हो सके।

डॉ. बी. के. सिंह, भारतीय कृषि सहकारिता एवं विपणन, पृ. क्र. 117
डॉ. देवेन्द्र प्रसाद, कृषि वित्त, व्यवसाय प्रबन्ध एवं व्यापार, पृ. क्र. 05

cSd ds dk;l

''केन्द्रीय सहकारी बैंक भारतीय सहकारी व्यवस्था के ढ़ाँचे का मध्य भाग है। ये शीर्ष बैंक व प्राथमिक साख समितियों के मध्य सम्पर्क कड़ी का काम करते है। इनका मुख्य कार्य प्राथमिक साख समितियों एवं सदस्यों को साख सुविधायें उपलब्ध करवाना है।''[3] जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक के कार्य 1. कृषि और कृषि सहायक प्रयोजनों हेतु ऋण उपलब्ध कराना। 2. ऋण वितरण के लिए निरीक्षण। 3. विविध अमानतें (जमा) स्वीकार करना : जैसे– चालू अमानत, बचत अमानत, सावधि अमानत, आवर्ती (रिकरिंग) अमानत। 4. ऋण वितरण एवं वितरित ऋणों की वसूली करना जैसे :–

vof/k ds vk/kkj ij _.k dk foHkktu ÑfA ,oa ÑfA lgk;d enk gsrq %&

''दार्घकालीन ऋण – ट्रैक्टर, लघु सिंचाई नलकूप, वाहन, आवास, जे.सी.बी. उपकरण, हार्वेस्टर, डेयरी, पोल्ट्री, गोदाम आदि।

मध्यकालीन ऋण – बैंलजोड़ी/भैसाजोड़ी एवं गाड़ी, कुंआ निर्माण, सिंचाई हेतु पाईप, स्प्रिंकलर, बोर, डीजल पम्प, सबमर्सिबल पम्प, पावर थ्रेसर/पावर रिपर, विद्युत पम्प, पशुपालन, गोबर गैस, डबरी निर्माण, मिनी राईस मिल, फलोद्यान, औषधि खेती, साग सब्जी, मत्स्यपालन आदि।

अल्पकालीन ऋण – लघु सिंचाई, नगद एवं खाद बीज (खरीफ एवं रबी दोनो फसलों हेतु) आदि।''[4]

'kks/k dk mnns';

- जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक मर्यादित दुर्ग के कार्यों का अध्ययन।
- जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक मर्यादित दुर्ग का कृषकों पर प्रभाव।
- जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक मर्यादित दुर्ग की ऋण प्रक्रिया का अध्ययन।
- जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक मर्यादित दुर्ग में हो रहे अनियमितता का अध्ययन।
- राज्य में जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक के योगदान का अध्ययन।

vuql/kku ifof/k

किसी भी अनुसंधान कार्य में अनुसंधान प्रविधियों को अधिक महत्वपूर्ण माना जाता है ''वैज्ञानिक अनुसंधान अथवा सर्वेक्षण में अनेक प्रकार की सामग्री एवं संकलन की अनेक पद्धतियाँ है। अध्ययन से सम्बन्धित कई सूचनाएँ ऐसी होती है जो अध्ययनकर्ता स्वयं एकत्र करता है तथा दूसरी संस्थाओं और समितियों द्वारा एकत्र सामग्री को अपने अध्ययन में उपयोग करता है।''[5] इस शोध अध्ययन में समंक

- डॉ. बी. पी. गुप्ता, सहकारिता के सिद्धान्त एवं व्यवहार, पृ. क्र. 157
- साक्षात्कार, ऋण नीति–जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक मर्यादित दुर्ग (छ.ग.) 2012–2013

वीरेन्द्र प्रकाश शर्मा, रिसर्च मेथडॉलॉजी, पृ. क्र. 227

संकलन हेतु प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनो पद्धतियों का प्रयोग किया गया है। प्राथमिक समंक को साक्षात्कार पद्धति के माध्यम से एकत्र किया गया है और द्वितीयक समंको के संकलन में जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक मर्यादित दुर्ग का वार्षिक प्रतिवेदन, ऋण नीति, सम्बन्धित पुस्तकों का उपयोग किया गया है। ताकि शोध कार्यों में क्रमबद्धता एवं सरलता हो और शोध में प्रमाणिक अध्ययन हो।

'kks/k v/;;u dk {k=

शोध अध्ययन में जिला सहकारी केन्द्रीय बैक मर्यादित दुर्ग के कार्य क्षेत्र को लिया गया है। ''बैंक का कार्यक्षेत्र दुर्ग, बालोद एवं बेमेतरा जिला है जिसमें दुर्ग, बेमेतरा, बेरला, डौंडी, बालोद, साजा, पाटन, डौण्डीलोहारा, धमधा, गुण्डरदेही, गुरूर, नवागढ, थानखम्हरिया तहसील तथा दुर्ग, बेमेतरा, बालोद, बेरला, साजा, पाटन, डौंडी, डौण्डीलोहारा, धमधा, गुण्डरदेही, गुरूर, नवागढ़ विकासखण्ड है। प्रत्येक विकासखण्ड स्तर पर बैंक की शाखाएँ कार्यरत है। ''[6] दुर्ग, बालोद एवं बेमेतरा (अविभाजित जिला दुर्ग) की कुल जनसंख्या 33,43,872 है एवं क्षेत्रफल 8535 वर्ग कि.मी. है। जिसमें नगरीय जनसंख्या 12,84,765 व 38.42% एवं ग्रामीण जनसंख्या 20,59107 व 61.58% है।

ifjdYiuk,s

- कृषक बैंक की विभिन्न सुविधाओं का लाभ उठा रहे है।
- बैंक की ऋण वितरण प्रक्रिया सरल है।
- बैंक में आर्थिक अनियमितता हो रही है।
- बैंक कृषकों के विकास में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रहा है।

foxr वर्षा 5 es cSd }kjk _.k forj.k] olwyh ,oa ifr'kr dk fooj.k

जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक द्वारा कृषि एवं कृषि सहायक मदों पर दी जाने वाली ऋणों का विगत 5 वर्षों में ऋण वितरण एवं वसूली तथा उनका प्रतिशत तालिका क्र. 1 में निम्नानुसार स्पष्ट है।

तालिका क्र. 1 (राशि लाखों में)

क्र.	वर्ष	ऋण वितरण	वसूली	प्रतिशत
1	31/03/2009	35,373.54	33,299.22	94.13
2	31/03/2010	48,104.28	44,026.35	91.52
3	31/03/2011	55,057.17	52,342.20	95.06
4	31/03/2012	69,678.33	63,729.23	91.46
5	31/03/2013	1,03,333.89	88,246.56	85.40
	योग :	3,11,547.21	2,81,643.56	90.40

Volume : 5 | Issue : 10 | October 2015 | ISSN - 2249-555X

स्त्रोतः– वार्षिक प्रतिवेदनः–जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक मर्यादित दुर्ग (छ.ग.) 2008–09 से 2012–13

वार्षिक प्रतिवेदन–जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक मर्यादित दुर्ग (छ.ग.) 2008–09 से 2012–13

r =.99 उच्च स्तर का धनात्मक सहसम्बन्ध है।

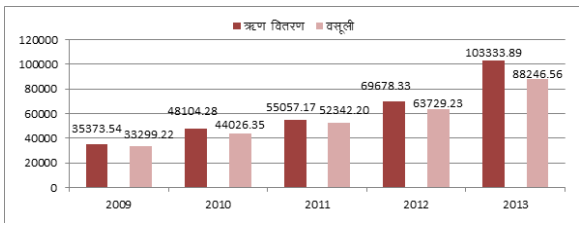

उपरोक्त तालिका क्रमांक 1 से यह स्पष्ट होता है कि बैंक द्वारा ऋणों का वितरण सफलतापूर्वक किया गया है। प्रतिवर्ष ऋण वितरण की राशि में वृद्धि हुआ है। और वर्षवार 2009 में 94.13% , 2010 में 91.52% , 2011 में 95.06% , 2012 में 91.46% और 2013 में 85.40% वसूली का प्रतिशत रहा। तथा औसत 90.40% रहा। बैंक ऋण वितरण एवं वसूली का कार्य कुशलतापूर्वक कर रहा है।

ऋण वितरण और वसूली के मध्य सहसम्बन्ध ज्ञात किया गया तो दोनो के मध्य r = .99 उच्च स्तर का धनात्मक सहसम्बन्ध पाया गया। इस सम्बन्ध में ज्ञात हुआ कि कृषकों द्वारा विक्रय की गयी उपज में से सबसे पहले बैंक ऋण की किश्त वसूली जाती है। तत्पश्चात ही कृषक को शेष राशि का भुगतान किया जाता है।

foxr o"kksa 5 esa cSad dk }kjk LohÑr vekurksa ¼tek½ dk fooj.k

जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक द्वारा स्वीकृत की जाने वाली विविध अमानतों (जमा) का विगत 5 वर्षों में विभिन्न जमा योजनाओं का वर्षवार वर्गीकरण के आधार पर स्थिति इस प्रकार है।

तालिका क्र. 2 (राशि लाखों में)

क्र	सत्र / विवरण	चालू अमानत	बचत अमानत	सावधि अमानत	रिकरिंग अमानत
1	31/03/2009	1,789.00	23,691.41	12,603.11	1,323.01
2	31/03/2010	1,586.83	26,640.84	15,533.31	1,671.06
3	31/03/2011	1,599.40	28,584.70	20,907.80	1,790.91
4	31/03/2012	1,427.88	33,694.51	25,674.96	1,385.03
5	31/03/2013	2,497.95	45,210.72	28,455.90	3,205.79
	योग	8,901.06	1,57,822.18	1,03,175.08	9,375.80

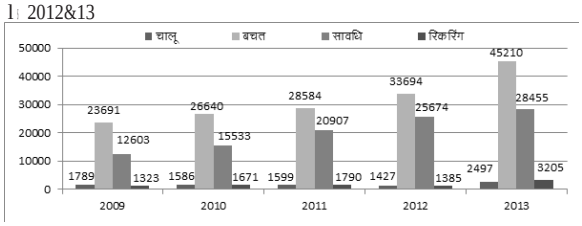

स्त्रोतः– वार्षिक प्रतिवेदन : जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक मर्यादित दुर्ग (छ.ग.) 2008–09 से 2012–13

okf'kZd izfronu&ftyk lgdkjh dsUnzh; cSad e;kZfnr nqxZ ¼N-x-½ 2008&09 ls 2012&13

तालिका क्रमांक 2 में बैंक के विभिन्न अमानतों (जमा) के विवरण से यह ज्ञात होता है कि जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक द्वारा व्यापारिक बैंकों की तरह विभिन्न अमानतें (जमा) भी स्वीकार करती है। और उन पर ब्याज दर राष्ट्रीय कृषि एवं ग्रामीण विकास बैंक National Bank for Agriculture and Rural Development (NABARD) के निर्देशानुसार दिया जाता है। जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक में शहरों की अपेक्षा ग्रामीण सदस्य अधिक है और ग्रामीण सदस्य बचत जमाओं का अधिक उपयोग करते है।

fu"d"kZ

जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक मर्यादित दुर्ग के अध्ययन से यह स्पष्ट है कि बैंक निरन्तर कृषकों, अकृषकों, कारीगरों, शिल्पियों एवं बेरोजगारों की सेवा कर रहा है। सभी वर्गों के कृषकों को कृषि एवं कृषि सहायक सम्बन्धित ऋण उपलब्ध करा कर और ग्रामीणों को उनके विभिन्न प्रयोजनों में वित्तीय सहायता प्रदान करता है। बैंक से ऋण प्राप्त करने की प्रक्रिया सरल है जिससे कि सेवा सहकारी समितियों के माध्यम से अधिक से अधिक कृषक बैंक की सदस्ता ग्रहण कर रहे है। और बैंक की विभिन्न योजनाओं का उठा रहे है। बैंक कृषि एवं कृषि सहायक ऋण की उपलब्धता के साथ–साथ व्यापारिक बैंकों की तरह जमाएँ भी स्वीकार करता है। बैंक के अध्ययन में यह भी पाया गया कि बैंक के कार्यों में राजनैतिक हस्तक्षेप होता है जिससे बैंक अपना कार्य स्वतन्त्र रूप से नही कर पा रहा है। साथ ही बैंक में आर्थिक अनियमितता भी पाया गया है। ऋणों का वितरण और वसूली की स्थिति से यह स्पष्ट है कि बैंक वितरित ऋणों की वसूली का प्रतिशत बहुत अच्छा है। जो औसत 90.40% है।

समस्या

1.बैंक की ऋण प्रक्रिया सरल होते हुए भी कृषकों को ऋण प्राप्त करने में अधिक समय लगता है।

2. उन्हे ऋण प्राप्त करने के लिए अधिक औपचारिता को पूरा करना पड़ता है और बैंक के चक्कर भी काटने पड़ते है।

3. बैंक में राजनैतिक हस्तक्षेप पाये जाने के कारण पदाधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा आर्थिक अनियमितता उत्पन्न हो गई है। किसी भी कार्य को करने पर हितग्राहियों से अप्रत्यक्ष आर्थिक लाभ की मांग करते है।

4. कुछ कृषक ऋण लेने हेतु राजनीति या दलालों की सहायता भी लेते है ताकि उन्हे आसानी से ऋण प्राप्त हो जाये।

5. (नगद, खाद, बीज ऋण छोड़कर) कृषि ऋण पर ब्याज की दर से कृषक असंतुष्ट है। कृषको के अनुसार बैंक द्वारा लिया जाने वाले ब्याज की दर कृषि प्रायोजन हेतु अधिक है।

lq>ko

जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक मर्यादित दुर्ग अपने कार्य क्षेत्र में कुशलतापूर्वक कार्य कर रहा है। बैंक के विभिन्न योजनाओं से कृषकों को लाभ पहुँचा रहें है। फिर भी बैंक में कुछ समस्याएं है जिसका समाधान करके बैंक अपना कार्य और अधिक कुशलतापूर्वक कर सकता है।

1. बैंक द्वारा ऋण वितरण प्रक्रिया को संशोधित कर और अधिक सरल एवं सुगम बनाना चाहिए। 2. बैंक की ऋण नीति में सुधार किया जाना चाहिए जिससे कृषकों को ऋण प्राप्त करने हेतु अनावश्यक समस्याओं का सामना ना करना पड़े।

3. बैंक की ब्याज दर अधिक होने के कारण कृषकों पर अधिक प्रभाव पड़ता है। जिसके कारण लघु एवं सीमांत कृषक असमर्थ महसुस करते है। बैंक द्वारा ब्याज दर को कम करना चाहिए जिससे कि सभी वर्गों के कृषक बैंक की योजनाओं का लाभ उठा सके।

4. कृषक ऋण लेने के लिए राजनीति या दलालों के माध्यम से ऋण प्राप्त करते है जिसके कारण बैंक के कार्यों पर प्रभाव पड़ता है। उसका प्रभावी रूप से समाधान किया जाए।

5. बैंक में अनावश्यक राजनैतिक हस्तक्षेप नही होना चाहिए।

6. बैंक द्वारा ग्रामीण विकास के हर पहलू ध्यान दिया जाता है। बैंक द्वारा समय–समय पर प्रभावी योजनाओं का निर्माण किया जाना चाहिए जिसमें ग्रामीण विकास के साथ बैंक आर्थिक विकास में भी अपना महत्वपूर्ण योगदान दे सके।

REFERENCE
डॉ. गुप्ता बी. पी. , सहकारिता के सिद्धान्त एवं व्यवहार डॉ. प्रसाद देवेन्द्र , कृषि वित्त, व्यवसाय प्रबन्ध एवं व्यापार डॉ. सिंह बी. के. , भारतीय कृषि सहकारिता एवं विपणन शर्मा वीरेन्द्र प्रकाश, रिसर्च मेथडॉलॉजी वार्षिक प्रतिवेदन–जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक मर्यादित दुर्ग (छ.ग.) 2012–2013 ऋण नीति–जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक मर्यादित दुर्ग (छ.ग.) 2012–2013 छत्तीसगढ़ सन्दर्भ ़णबहणहवअण्पद ़णबहणnic.in